

स्कूली स्टेट फिर बदली तिथियां, अब 16 से खेलों में खेला होंगी स्कूल खेल प्रतियोगिताएं

बार बार संशोधन से खिलाड़ियों में रोष

हरिभूमि न्यूज ►► रोहतक

शिक्षा निदेशालय, हरियाणा ने 59वीं राज्य स्तरीय स्कूल खेल प्रतियोगिताओं (2026-27) की तिथियों में फिर संशोधन किया है। शिक्षा विभाग में पहले भी तीन बार इसमें संशोधन किया है। प्रतियोगिता के बार बार संशोधन से खिलाड़ियों में काफी रोष है। शिक्षा विभाग स्कूली खेल प्रतियोगिता में खेला कर रहा है। इससे पहले तो प्रतियोगिता के एक दिन पहले शेड्यूल में संशोधन किया था। प्रतियोगिता में संशय है कि प्रतियोगिता कब होगी। जारी पत्र के अनुसार एएसटी परीक्षाओं और शूटिंग व ताइक्वांडो के अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंट्स की तारीखें आपस में टकराने के कारण यह निर्णय लिया गया है। संशोधित शेड्यूल के अनुसार प्रतियोगिताएं 16 सितंबर से 18 सितंबर तक विभिन्न जिलों में आयोजित होंगी। इसमें अंबाला में

अंडर-14 स्कूली स्टेट प्रतियोगिता में खिलाड़ियों को नहीं मिल रहा टीए-डीए जेब से खर्च करने पड़ रहे रुपये

हरिभूमि न्यूज ►► रोहतक

अंडर-14 स्कूली स्टेट खेल प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले खिलाड़ियों और उनके अभिभावकों को गंभीर आर्थिक परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। यह प्रतियोगिता प्रदेश के अलग अलग जिलों में आयोजित की जा रही है। जिले के किसी भी खिलाड़ी को अभी तक ट्रेवलिंग अलाउंस (टीए) और डेली अलाउंस (डीए) नहीं मिला है, जबकि अन्य जिलों में खिलाड़ियों को यह भत्ता समय पर मिल चुका है। अभिभावकों ने रोष जताते हुए बताया कि वे अपने निजी खर्च पर बच्चों को प्रतियोगिताओं में भेजने के लिए मजबूर हैं। नियमानुसार खिलाड़ियों को 200 रुपये प्रतिदिन डीए और दूरी के हिसाब से ट्रांसपोर्ट अलाउंस मिलने का प्रावधान है। दूर के जिलों में मुकाबले होने पर खर्च और बढ़ जाता है, जिससे मध्यम वर्गीय परिवारों पर भारी आर्थिक बोझ पड़ रहा है। इसके बावजूद, रोहतक के युवा खिलाड़ी तमाम

नियमानुसार खिलाड़ियों को 200 रुपये प्रतिदिन डीए और दूरी के हिसाब से ट्रांसपोर्ट अलाउंस मिलने का प्रावधान

विपरीत परिस्थितियों और बिना किसी वित्तीय सहायता के शानदार प्रदर्शन करते हुए पदक अपने नाम कर रहे हैं। जिला सहायक शिक्षा अधिकारी (खेल) संदीप दांगी ने बताया कि उन्होंने हाल ही में कार्यभार संभाला है और वर्तमान में खेल रही टीमों के पूर्व अधिकारी के कार्यालय के दौरान भेजी गई थीं। उन्होंने आश्वासन दिया कि जिन टीमों को अब तक टीए-डीए नहीं मिल पाया है, उन्हें आगामी बजट आते ही भुगतान कर दिया जाएगा और भविष्य में बाहर जाने वाली टीमों को समय पर भत्ता उपलब्ध कराया जाएगा।

देहरादून में दम दिखवाएंगे हरियाणा के 171 युवा सितारे

37वीं नॉर्थ जोन जूनियर एथलेटिक्स टीम घोषित

हरिभूमि न्यूज ►► रोहतक

14 से 16 सितंबर तक देहरादून में आयोजित होने वाली 37वीं नॉर्थ जोन जूनियर एथलेटिक्स चैंपियनशिप के लिए एथलेटिक्स हरियाणा ने 171 खिलाड़ियों की टीम की घोषणा कर दी है। फरीदाबाद के मीडिया प्रभारी सत्यवीर धनखड़ और महासचिव प्रदीप मलिक ने बताया कि इस महाकुंभ में 85 बालिका और 86 बालक एथलीट भाग ले रहे हैं।

चैंपियनशिप में भाग लेने वाले विभिन्न जिलों के खिलाड़ी

फतेहाबाद: शुभम, खुशंत चोपड़ा, रजत, अभिषेक, निकिता चहल, पुष्पा, भुवी अग्रवाल, कशिश, खुशदीप कौर, रितिका **सोनीपत:** करण नैन, लकी, मंजीत, वंश मोर, रितेश चहल, शिवम, मयंक दुडी, नवदीप, मानव, रश्मित बेनीवाल, युवराज संध्यान, दक्ष सोलंकी, अंशुल, वंश कुमार, कार्तिक शर्मा, दीपांशु , मन्त, रेणु, भावना, अनुष्का, दीक्षा **रोहतक:** अक्षय, प्रिंस, विकास राठी, जतिन, स्नेहा सेनी, चेलसी, रिया वर्मा, विधि बुधवार, सौम्या ढाका, पावनी **गुरुग्राम:** अवनीश, हन्नी यादव

झज्जर: कृष गुलिया, हितेश जाखड़, आर्यन, दीपांशु, लक्ष्य, नितेश कुमार, ध्रुव, प्रतिभा, खुशी, पूजा, अंजू शर्मा, रितिका **जॉड:** बिल्लू, रूपजोत सिंह, सक्षम, रितेश **चहल,** अंकुश मुकेश, मुस्कान, नेहा, अनमोल **अंबाला:** युवराज सेनी, आदित्य सेनी, भारती **रेवाड़ी:** जतिन कुमार, दिनेश तंवर, मान सिंह भड़ाना, लक्ष्य लांबा, आदित्य, ध्रुव यादव, गुंजन यादव, मुस्कान, नव्या यादव **पानीपत:** अर्जुन, रुद्र, कुशल कांबोज, सोयां, युवराज संध्यान, मन्मत फोगाट, साक्षी, दिव्या, मोनी, अनुष्का, दीक्षा **महेन्द्रगढ़:** दीपेन्द्र, लक्ष्य लांबा, अमिषा, लावण्या चरखी दादरी: अनीश कुमार, कृष्ण कुमार, नमन, मयंक दुडी, मोक्ष परमार, झलक, निशा, वंशिका महला, आराध्या सिंह, दीक्षा **भिवानी:** सुमित, अखिल कुमार, परवीन कुमार, आर्यन यादव, रवि, सीमा, अंशुल कटारिया, कशिश, मोनिका बरसीवाल, ज्योति, मुस्कान भिवानी, दिव्या भिवानी **सिरसा:** सुकृत स्वामी, करण, मंजू, गायत्री, हरमन **कैथल:** मयंक, अंकुश मुकेश, अनामिका, हनप्रीत **करनाल:** साहिल अट्कण, ककशिश खांची, दिव्या, तुषित **फरीदाबाद:** मान सिंह भड़ाना, दक्ष, नेहा, कल्पना **यमुनानगर:** सन्नी, कुशल कांबोज **कुरुक्षेत्र:** गौरांश सेनी, स्नेहा **पलवल:** प्रदीप



बाबा मस्तनाथ विवि में पुरुष वॉलीबॉल में 30 खिलाड़ियों ने लिया हिस्सा

रोहतक। बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर स्थित फैकल्टी ऑफ मेडिकल एंड एनालड हेल्थ साइंसेज की ओर से पुरुष वॉलीबॉल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में लगभग 30 विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लेते हुए उत्कृष्ट खेल भावना, अनुशासन, टीम भावना और प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता का प्रदर्शन किया। प्रतियोगिता में टीम ए ने शानदार प्रदर्शन करते हुए विजेता बनने का गौरव हासिल किया। विजेता टीम में कप्तान विनीत के अलावा रोहित मोर, आर्यन, वंश माथुर, अवनीश, नितेश, दीपक, सुमित और राहुल शामिल रहे। प्रतियोगिता का आयोजन स्पोर्ट्स डायरेक्टर अशोक, स्पोर्ट्स सेक्रेटरी बाबलू शर्मा तथा फैकल्टी ऑफ मेडिकल एंड एनालड हेल्थ साइंसेज की स्पोर्ट्स इंवाजर् डॉ. प्रीति सांगवान के मार्गदर्शन एवं पर्यवेक्षण में किया गया। आयोजन को विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.एम. यादव, रजिस्ट्रार विनोद कुमार तथा विभागाध्यक्ष डॉ. चारु शर्मा का सहयोग एवं आशीर्वाद प्राप्त हुआ।

आर्चरी में छाए भाई-बहन यक्ष और यशवी, यक्ष नेशनल के लिए चयनित

रोहतक। शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित 59वीं हरियाणा स्कूल स्टेट आर्चरी प्रतियोगिता का आयोजन 11 से 13 सितंबर तक किनाना, जॉड में किया जा रहा है। प्रतियोगिता में नवयुग शिक्षा निवेशन सॉल्यूटिज सेकेंडरी स्कूल, भैयापुर-लादौत, रोहतक के कक्षा आठवीं के छात्र यक्ष देशवाल और उनकी जुड़वा बहन यशवी देशवाल ने अंडर-14 आयु वर्ग में शानदार प्रदर्शन करते हुए रोहतक जिले का नाम रोशन किया। आर्चरी टीम इंवाजर् डॉक्टर जनक राज ने बताया कि दोनों भाई-बहन पिछले लगभग चार वर्षों से आर्चरी का नियमित अभ्यास कर रहे हैं। प्रतियोगिता में यशवी देशवाल ने बेहतरीन प्रदर्शन किया और नेशनल चयन से मात्र एक अंक से चूक गईं। वहीं यक्ष देशवाल ने अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए हरियाणा की टीम में स्थान पक्का किया। अब यक्ष महाराष्ट्र में आयोजित होने वाली नेशनल स्कूल आर्चरी प्रतियोगिता में हरियाणा प्रदेश का प्रतिनिधित्व करेंगे। यक्ष का चयन सीबीएसई नेशनल के लिए भी हुआ है। यक्ष और यशवी के पिता नरेंद्र सिंह स्वयं कबड्डी खिलाड़ी रहे हैं तथा अलग इंडिया यूनिवर्सिटी स्तर पर मेडल जीत चुके हैं। वर्तमान में वे हरियाणा पुलिस विभाग में कार्यरत हैं, जबकि उनकी माता गृहिणी हैं। माता-पिता के प्रोत्साहन और मार्गदर्शन से दोनों भाई-बहन खेल के क्षेत्र में लगातार आगे बढ़ रहे हैं। दोनों विद्यार्थी खेल के साथ-साथ पढ़ाई में भी प्रतिभाशाली और मेहनती हैं। उनकी इस उपलब्धि पर जिला मौलिक शिक्षा अधिकारी बिजेन्द्र हुड्डा, सुरेश चंद्र देशवाल, एईईओ संदीप दांगी, डॉक्टर जनक राज तथा अन्य सभी अधिकारियों ने यक्ष और यशवी को बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।



रोहतक। आर्चरी खिलाड़ी यक्ष और यशवी देशवाल टीम इंवाजर् डॉक्टर जनक राज के साथ। फोटो: हरिभूमि

सेवा संकल्प अभियान विकसित भारत के संकल्प को देगा मजबूती : डॉ रंगा



कलानौर। सेवा संकल्प अभियान को लेकर आज कलानौर मंडल में मंडल स्तरीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में डॉ अशोक कुमार रंगा मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे, जबकि कार्यशाला की अध्यक्षता मंडल अध्यक्ष कुलदीप कौशिक ने की। कार्यशाला को संबोधित करते हुए डॉ अशोक कुमार रंगा ने कहा कि 17 सितंबर से 17 अक्टूबर 2026 तक चलने वाला सेवा संकल्प अभियान सेवा, जनभागीदारी और विकसित भारत 2047 के सामूहिक संकल्प को समाज के विभिन्न वर्गों तक पहुंचाने की व्यापक कार्ययोजना है। अभियान के अंतर्गत बूथ, परिवार, विद्यालय, आंगनवाड़ी, गांव, युवा, लाभार्थी और जनप्रतिनिधियों को सहभागिता से विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। कार्यशाला में मंडल महामंत्री राकेश पांचवाल, अलका महामंत्री, सीता राम राठी वाइस चेयरमैन ब्लॉक समिति, रविंद्र सरपंच जिला अध्यक्ष ओबीसी मोर्चा, जितेंद्र सरपंच, नवीन सरपंच , कश्मीरी सरपंच, धर्मवीर सरपंच , रवि टकर, गुलशन दुआ, जितेंद्र चावला पूर्व मंडल अध्यक्ष, गुलाब सिंह, बजरंग बीडीसी, प्रतुल आनंद वाइस चेयरमैन प्रतिनिधि, लक्ष्मी नारायण पाण्डे, अमित पाण्डे, पिचू पाण्डे, सूर्यकांत पाण्डे , रेखा पाण्डे, राज सिंह , रजनीश शर्मा , मुकेश व भाजपा के अन्य वरिष्ठ कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

चौधरी बंसीलाल क्रिकेट स्टेडियम में फरीदाबाद ने कुरुक्षेत्र को 5 विकेट से हराकर किया क्वालीफाई

रोहतक। चौधरी बंसीलाल क्रिकेट स्टेडियम ग्राउंड-बी, लाहली में शनिवार को खेले गए रोमांचक मुकाबले में फरीदाबाद की टीम ने कुरुक्षेत्र को 5 विकेट से शिकस्त देकर शानदार जीत दर्ज की और अगले दौर के लिए क्वालीफाई कर लिया। मैच में कुरुक्षेत्र की टीम ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए 47.2 ओवरों में 139 रन बनाकर ऑल आउट हो गई। जवाब में लक्ष्य का पीछा करने उतरी फरीदाबाद की टीम ने 37.4 ओवरों में 5 विकेट के नुकसान पर 143 रन बनाकर मुकाबला अपने नाम कर लिया।



हरिभूमि न्यूज ►► रोहतक

शहर के कई इलाकों में दूषित पेयजल की समस्या लोगों के लिए परेशानी का कारण बनी हुई है। घरों में नलों के जरिए साफ पानी की जगह गंदा और बदबूदार पानी पहुंच रहा है। स्थानीय लोगों का आरोप है कि समस्या को लेकर संबंधित विभाग को कई बार शिकायत की जा चुकी है, लेकिन इसके बावजूद स्थायी समाधान नहीं हो रहा। लोगों को मजबूरी में पीने के लिए बाजार से पानी खरीदना पड़ रहा है। वहीं दूषित पानी के कारण बीमारियां फैलने

बढ़बूढ़ार पानी ने बढ़ाई परेशानी, नहीं हो रहा समाधान नलों में आ रहा गंदा पानी अब फैलने लगी बीमारियां

पाइप लाइन की लीकेज ठीक करवाई जाए

शिकायतों के बावजूद समस्या का समाधान नहीं होने से उनकी परेशानी बढ़ती जा रही है। प्रभावित क्षेत्र का निरीक्षण कर पानी की गुणवत्ता की जांच कराई जाए। साथ ही पाइपलाइन में लीकेज या अन्य तकनीकी खामी मिलने पर उसे तुरंत ठीक कराया जाए, ताकि लोगों को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध हो सके।

रामकिशन पावडिया की आशंका भी बनी हुई है। स्थानीय निवासी जसवीर कुमार ने बताया कि पुराना हाउसिंग बोर्ड व प्रीत विहार कॉलोनी में पिछले कई दिनों से नलों में साफ पानी नहीं आ रहा। पानी का रंग बदला हुआ है और उसमें दुर्गंध भी आती है। उन्होंने कहा कि परिवार के लोग इस पानी का इस्तेमाल पीने के लिए नहीं कर पा रहे हैं। कई बार अधिकारियों और कर्मचारियों को शिकायत दी गई, लेकिन समस्या जस की तस बनी हुई है। उन्होंने मांग की कि विभाग मौके पर पानी के नमूने लेकर जांच करवाए और पाइपलाइन की स्थिति की भी जांच करें।

रोजमर्रा के काम भी हो रहे प्रभावित

दूषित पानी आने के कारण रोजमर्रा के काम भी प्रभावित हो रहे हैं। बच्चों और बुजुर्गों के स्वास्थ्य को लेकर सबसे ज्यादा चिंता बनी हुई है। यदि पेयजल लाइन में कहीं लीकेज है या सीवर का पानी पेयजल लाइन में मिल रहा है तो विभाग को इसकी तत्काल जांच करनी चाहिए।

जल्द समस्या का समाधान विभाग को करना चाहिए। लोगों काफ़ी परेशान हो चुके हैं। आर्थिक नुकसान भी ज्यादा हो रहा है। टैकरो के सहारे पूर्ति पूरी की जा रही है।

एलएन हिंदू कॉलेज में एनएसएस का अभिमुखीकरण कार्यक्रम , युवाओं को मिला समाज सेवा का संदेश

रोहतक। जिले के श्री एलएन हिंदू कॉलेज की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाइयों द्वारा नव-नामांकित स्वयंसेवकों के लिए एक भव्य अभिमुखीकरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्राचार्य डॉ. अनिल कुमार तनेजा की अध्यक्षता और कार्यक्रम अधिकारियों डॉ. रजनी कुमारी व डॉ. प्रवीण शर्मा के मार्गदर्शन में हुए इस कार्यक्रम का शुभारंभ एनएसएस गीत के साथ हुआ। इस दौरान स्वयंसेवकों संजय और हिमांशु ने "नशा मुक्त भारत" तथा "बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ" विषयों पर शानदार रागिनी प्रस्तुत कर सामाजिक जागरूकता का अनूठा संदेश दिया। प्राचार्य डॉ.

बीएमयू में इंद्रा मूट कोर्ट प्रतियोगिता में शिवानी-छवि की टीम ने मारी बाजी



तनेजा ने स्वयंसेवकों को संबोधित करते हुए कहा कि एनएसएस विद्यार्थियों में अनुशासन, नेतृत्व क्षमता और राष्ट्र निर्माण की भावना विकसित करने का प्रमुख माध्यम है। कार्यक्रम में मुस्कान, गगन, अतिष्ठा और लावण्या ने पीपीटी के माध्यम से एनएसएस के आउटरीच

कार्यक्रमों की विस्तृत जानकारी दी। इस अवसर पर परामर्श समिति के सदस्यों सहित निकिता, सारिका, मनीषा, शिवम, चैतन्य, सतीश, जहान और संजु समेत बड़ी संख्या में स्वयंसेवक उपस्थित रहे। कार्यक्रम के अंत में डॉ. रजनी कुमारी ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया।



शोध, प्रस्तुतीकरण, वकालत कौशल एवं विषय की समझ का मूल्यांकन किया। कड़े मुकाबले के बाद शिवानी एवं छवि की टीम ने प्रथम स्थान हासिल कर विजेता का खिताब अपने नाम किया, जबकि अक्षय कुमार एवं सौरव लाठवाल की टीम उपविजेता रही। व्यक्तिगत श्रेणियों में शिवानी को सर्वश्रेष्ठ शोधकर्ता, मेघा वर्मा को सर्वश्रेष्ठ मूटर तथा शुभम कुमार, चरेस्टा एवं सलोनी को सर्वश्रेष्ठ मेमोरियल का पुरस्कार प्रदान किया गया। डीन डॉ. मनीष दलाल एवं विभागाध्यक्ष डॉ. रितु ने विजेता एवं उपविजेता टीमों सहित सभी प्रतिभागियों को उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए बधाई दी।

एडवांटा हॉस्पिटल रोहतक के डॉक्टरों ने निःशुल्क स्वास्थ्य जांच की



रोहतक। दिल्ली रोड पर स्थित एडवांटा सुपर स्पेशलिस्ट हॉस्पिटल के अनुभवी डॉक्टरों ने प्राचीन शीतला माता मंदिर परिसर में निशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया। इस स्वास्थ्य जांच शिविर में 115 श्रद्धालुओं ने लाभ उठाया। एडवांटा हॉस्पिटल के निदेशक मोहित मलिक की तरफ से निशुल्क दवाइयों वितरित की गई। यह स्वास्थ्य जांच शिविर डॉ अंकुर वर्मा, डॉ रमेश चंद्र , डॉक्टर मोहित दांडा, डॉक्टर अर्चना देहिया डॉक्टर रघु के शर्मा , डॉ सौरभ, डॉक्टर बबोला बरक, डॉक्टर श्वेता यादव, डॉक्टर सचिन, डॉ गनवत की देखरेख में लगाया गया नर्सिंग ऑफिसर तमज्जा ने नर्सिंग सेवाएं दीं । शीतला माता मंदिर के महंत थावेश्वर दास उबेसीन ने प्राचीन शीतला माता मंदिर में निशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर लगते हैं। मुक्त दवा वितरण के लिए एडवांटा हॉस्पिटल के निदेशक मोहित मलिक एवं तमाम डॉक्टरों की टीम का तहे दिल से धन्यवाद किया।

रोहतक के रेल यात्रियों की बड़ी परेशानी चार ट्रेनों के संचालन में बदलाव

भिवानी-दिल्ली और सिरसा-दिल्ली रेलसेवा प्रभावित, आज से बदलेगा संचालन

हरिभूमि न्यूज ►► रोहतक

रेलवे की ओर से 12 और 13 सितंबर को चार रेलसेवाओं के संचालन और मार्ग में बदलाव किया गया है। इसका असर रोहतक से दिल्ली, भिवानी और सिरसा की ओर यात्रा करने वाले यात्रियों पर भी पड़ेगा। रेलवे ने कुछ ट्रेनों को निर्धारित स्टेशन के बजाय दूसरे स्टेशन से चलाने

भिवानी-तिलक ब्रिज ट्रेन शकूबस्ती तक ही जाएगी

रेलवे के अनुसार रेलसेवा संख्या 14737 भिवानी-तिलक ब्रिज 12 और 13 सितंबर को तिलक ब्रिज के बजाय शकूरबस्ती तक ही संचालित होगी। शकूरबस्ती से तिलक ब्रिज के बीच इसका संचालन आंशिक रूप से रह रहेगा। यह ट्रेन रोहतक से होकर दिल्ली की ओर जाने वाले यात्रियों के लिए महत्वपूर्ण है। ऐसे में रोहतक से तिलक ब्रिज और उसके आसपास के क्षेत्रों में जाने वाले यात्रियों को आगे की यात्रा के लिए वैकल्पिक व्यवस्था करनी पड़ सकती है।

और कुछ के संचालन को आंशिक रूप से रह रखने का निर्णय लिया है। ऐसे में रोजाना रेल से सफर करने वाले यात्रियों को परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। खासकर रोहतक-

स्टेशन पहुंचने से पहले जानकारी हासिल कर लें

रेलसेवा संख्या 14738 तिलक ब्रिज-भिवानी 12 और 13 सितंबर को तिलक ब्रिज के बजाय शकूरबस्ती से संचालित होगी। इससे भिवानी, रोहतक और दिल्ली के बीच यात्रा करने वाले यात्रियों को परेशानी हो सकती है। यात्रियों को ध्यान रखना होगा कि ट्रेन तिलक ब्रिज से नहीं मिलेगी। इसलिए स्टेशन पहुंचने से पहले ट्रेन के बदले हुए संचालन की जानकारी लेना जरूरी होगा।

दिल्ली और भिवानी-रोहतक-दिल्ली रेलमार्ग पर यात्रा करने वाले यात्रियों को अपनी ट्रेन के संचालन की जानकारी पहले ही जांचनी होगी। रेलसेवा संख्या 15307 तिलक ब्रिज-सिरसा 11

रामलीला के पूर्वान्यास का शुभारंभ



रोहतक। नारियल तोड़कर पूजा करवाते महामंडलेश्वर कपिल पुरी महाराज।

रोहतक। श्री सनातन धर्म पंजाबी रामलीला क्लब रजि. रोहतक की ओर से रामलीला के पूर्वान्यास का शुभारंभ किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नोकर्ण पीठाधीश्वर महामंडलेश्वर कपिल पुरी महाराज ने नारियल तोड़कर किया। इस अवसर पर क्लब के प्रधान मदन गुलाटी, शिवाजी नथी, राकेश कवाटाड़, सुरेश विद्यासागर, संजय भाटिया, कन्हैया शर्मा, पंकज गांधी, पवन बख्श सहित श्रीराम के अन्य भक्त मौजूद रहे। कार्यक्रम में हनुमान स्वरूप कलाकारों ने भी भाग लिया। क्लब के उपप्रधान कश्मीरी लाल और सनी शर्मा के साथ महिला मंडल की सदस्य भी उपस्थित रहीं। रामलीला मंचन से पहले हनुमान जी के स्वरूप की विधिवत पूजा-अर्चना की गई। क्लब पदाधिकारियों ने बताया कि रामलीला के सफल मंचन को लेकर कलाकारों ने पूर्वान्यास शुरू कर दिया है। इस दौरान श्रद्धालुओं ने भगवान श्रीराम के जयकारे लगाए।

खबर संक्षेप

पोषण आहार के लिए किया प्रेरित

सांपला। खंड के गांव पाकरूमा में शुक्रवार को महिला बाल विकास विभाग की ओर से राष्ट्रीय पोषण माह मनाया गया। इस मौके पर रंगोली प्रतियोगिता की कराई गई। जिसमें महिला व युवतियों ने भाग लिया। महिलाओं ने पोस्टर मेकिंग में पोष्टिक आहार के बारे में अपनी प्रतिभा दिखाई। वहीं सुप्रवाइजर प्रियंका ने बताया कि हमें अपने भोजन में प्रोटीन युक्त चीज शामिल करना चाहिए। जिसमें हरी सब्जियां दाल ,बाजार, मौसमी फल , दूध व अंडे आदि शामिल करें। ताजा भोजन करें। आंगनवाड़ी केंद्र पर आने वाले बच्चों को भी पोष्टिक आहार दें। इससे बच्चे का शारीरिक और मानसिक विकास होता है। कुपोषण से भी दूर रहते हैं। इस मौके पर महिलाओं को शायथ भी दिलाई गई।

बोस आपदा प्रबंधन पुरस्कार के लिए आवेदन आमंत्रित

रोहतक। उपायुक्त सतबीर सिंह ने बताया कि राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण की ओर से सुभाष चन्द्र बोस आपदा प्रबंधन पुरस्कार-2027 के लिए ऑनलाइन आवेदन आमंत्रित



किए गए हैं। आवेदन पोर्टल पर 30 सितंबर 2026 तक कर सकते हैं। सतबीर सिंह ने बताया कि व्यक्तियों और संगठनों के अमूल्य योगदान और निर्याथ सेवा भाव को पहचानने और सम्मानित करने के लिए सुभाष चंद्र बोस आपदा प्रबंधन पुरस्कार के नाम से वार्षिक पुरस्कार दिया जाता है। इस पुरस्कार की घोषणा हर साल 23 जनवरी को नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती पर की जाती है। केवल भारतीय नागरिक और भारतीय संस्थान ही पुरस्कार के लिए आवेदन करने के पात्र हैं। संस्थान स्वैच्छिक संगठनों, कॉरपोरेट संस्थाओं, शैक्षणिक अनुसंधान संस्थानों, प्रतिक्रिया/वर्दीधारी बलों या किसी अन्य संस्थान के लिए पुरस्कार के लिए एक संस्था के रूप में आवेदन कर सकते हैं।

सुपवा की फिल्म ‘जगत का देस’ की बांग्लादेश में होगी विशेष स्क्रीनिंग

■ 21 सितंबर से शुरू होगा 17वां इंटरनेशनल इंटर यूनिवर्सिटी शॉर्ट फिल्म फेस्टिवल

हरिभूमि न्यूज►►रोहतक

दादा लख्मी चंद स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ परफॉर्मिंग एंड विजुअल आर्ट्स (डीएलसीसुपवा) द्वारा प्रोड्यूस शॉर्ट फिल्म ‘जगत का देस’ की स्क्रीनिंग बांग्लादेश में होगी। इसका चयन 17वें इंटरनेशनल इंटर यूनिवर्सिटी शॉर्ट फिल्म फेस्टिवल (आईआईयूसएफएफ) के लिए किया गया है, जो ढाका में 21 सितंबर से शुरू होगा। इस शॉर्ट फिल्म को सुपवा के छात्रों ने तैयार किया है। फिल्म एवं टेलीविजन फेकल्टी के एफसी महेश टीपी ने बताया कि आईआईयूसएफएफ के लिए 92

नियम तोड़ने पर पहली बार 7736 की काउंसिलिंग

■ शिकंजा: 11534 के किए चालान, 30 के किए लाइसेंस निलंबित

हरिभूमि न्यूज►►रोहतक

जिला पुलिस ने अगस्त माह में यातायात नियम तोड़ने वालों के खिलाफ सख्त अभियान चलाया। इस दौरान अलग-अलग जगह नाकाबंदी के दौरान विभिन्न यातायात नियमों का उल्लंघन करने पर 11534 चालान किये। साथ ही 7736 व्यक्तियों की काउंसिलिंग की गई। इसी दौरान निर्धारित गति से तेज वाहन चलाने वाले 34 चालकों एवं नशा कर वहन चलाने वाले 30 चालकों के लाइसेंस निलंबन के लिए भेजे गए। अगस्त माह के दौरान बिना हेलमेट दो पहिया वाहन चलाने वालों के 2675 चालान, दो पहिया वाहन पर दूसरी सवारी द्वारा हेलमेट न लगाने के 30 चालान, बिना सीट बेल्ट गाड़ी चलाने वालों के 916 चालान, लाल बत्ती जंप करने वालों के 14 चालान किये गए।

नशा कर वाहन चलाने वालों के 399 चालान काटे

अगस्त माह के दौरान निर्धारित गति से तेज वाहन चलाने वालों के 175 चालान, वाहन चलाते समय मोबाइल फोन का प्रयोग करने वालों के 6 चालान, नशा करके वाहन चलाने वालों के 399 चालान, गलत स्थान पर वाहन पार्किंग करने वालों के 1545 चालान, गलत साइड से वाहन चलाने वालों के 1403 चालान तथा अन्य यातायात नियमों का उल्लंघन करने वालों के 4371 चालान किये गए।

बिना हेलमेट के 3 हजार चालान

जिला प्रशासन द्वारा यातायात नियमों का उल्लंघन करने वाले वाहन चालकों की काउंसिलिंग भी की जा रही है। गत अगस्त माह के दौरान ऐसे 7736 वाहन चालकों की काउंसिलिंग की गई। इनमें बिना हेलमेट वाहन चलाने वाले 3 हजार, बिना सीट बेल्ट गाड़ी चलाने वाले 920, निर्धारित गति से तेज वाहन चलाने वाले 300, नशे का सेवन कर वाहन चलाने वाले 420, गलत जगह वाहन पार्किंग करने वाले 1570 तथा गलत दिशा में वाहन चलाने वालों में 1450 चालक शामिल हैं। इन सभी को यातायात नियमों बारे जागरूक किया गया तथा उन्हें स्पेच्छा से इन नियमों का पालन करने के लिए प्रोत्साहित किया गया।

यातायात नियम

लोगों के लिए हितकारी

आमजन अपनी ओर अन्य नागरिकों के जीवन की सुरक्षा के दृष्टिगत सचेष्टा से यातायात नियमों का पालन करें। यह यातायात नियम नागरिकों के हित में ही बनाये गए हैं। जिला प्रशासन द्वारा भी यातायात नियमों को सख्ती से लागू किया जा रहा है तथा इन नियमों का उल्लंघन करने वालों के चालान करने के साथ-साथ उनकी काउंसिलिंग भी की जा रही है।

-सतबीर सिंह, उपायुक्त, रोहतक

मंगल कमल कार्यालय में मंत्री डॉ. अरविंद शर्मा बोले

जल्द सांपला तक आएगी मेट्रो, आयुष्मान में इलाज से मना किया तो होगी कड़ी कार्रवाई

हरिभूमि न्यूज►►रोहतक

सरकार किसी योजना पर फैसला ले तो विपक्ष सवाल उठाता है और सरकार देशहित में कोई कदम उठाए तो उसका विरोध शुरू हो जाता है। हरियाणा के कैबिनेट मंत्री डॉ. अरविंद शर्मा ने विपक्ष पर इसी अंदाज में हमला बोलते हुए कहा कि विपक्ष एक नरेंद्र तैयार कर देश को गुमराह करने का काम कर रहा है। उसका काम सरकार के हर कार्य में टांग अड़ाना रह गया है। उन्होंने कहा कि सरकार देशहित में जो उचित समझती है, उसी के आधार पर फैसले ले रही है। भाजपा प्रदेश कार्यालय मंगल कमल में शनिवार को पत्रकारों से बातचीत में कैबिनेट मंत्री ने कहा कि हरियाणा में मेट्रो विस्तार को लेकर सर्वे कराया गया था। सर्वे में कुछ क्षेत्रों के लिए मेट्रो की फिजिबिलिटी नहीं मिली। उन्होंने कहा कि मेट्रो आसौदा तक पहुंच चुकी है और इसे सांपला तक लाने के प्रयास किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा की आयुष्मान भारत योजना के तहत पैनल में शामिल अस्पताल यदि मरीजों का इलाज करने से इनकार करते हैं तो उनके खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। अपने सांसद कार्यकाल का जिक्र करते हुए कहा कि उन्होंने संसद में भी कहा था कि हर काम केवल फायदे के लिए नहीं किया जाता।



रोहतक। पत्रकारों से बातचीत करते कैबिनेट मंत्री डॉ. अरविंद शर्मा।

प्रधानमंत्री ने गुजरात मॉडल देश में लागू किया

डॉ. अरविंद शर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गुजरात मॉडल को पूरे देश में लागू किया है। सरकार देशहित में लगातार फैसले ले रही है, लेकिन विपक्ष हर मुद्दे को राजनीतिक रंग देने में लगा रहता है। उन्होंने कहा कि देश के हित में जो भी उचित होगा, सरकार वहीं निर्णय लेगी।

सदन में विपक्ष के सवालों पर भी कसा तंज

कैबिनेट मंत्री ने कहा कि विपक्ष सदन में ऐसी बातें करता है, जिनका कोई पिर-पैर नहीं होता। जब मुख्यमंत्री उन सवालों का जवाब देते हैं तो विपक्ष टिक नहीं पाता और फिर दिखाई नहीं देता। उन्होंने कहा कि प्रदेश के कर्ज को लेकर भी विपक्ष बेवजह मुद्दा बना रहा है। सरकार कर्ज लेती है तो उसे चुकती भी है। यह सामान्य आर्थिक प्रक्रिया है। सरकार कर्ज में डूबी नहीं है, बल्कि आर्थिक रूप से आगे बढ़ रही है।

किसी अस्पताल का भुगतान नहीं रोका

डॉ. अरविंद शर्मा ने कहा कि आयुष्मान भारत योजना के तहत बड़ी संख्या में निजी अस्पताल पैनल में शामिल हैं। सरकार ने किसी अस्पताल का भुगतान नहीं रोका है। यदि पैनल में शामिल कोई अस्पताल मरीज का इलाज करने से मना करता है तो उसके खिलाफ कार्रवाई की जाएगी।

वंदे मातरम पर विपक्ष कर रहा विरोध

कैबिनेट मंत्री अरविंद शर्मा ने कहा कि वंदे मातरम का प्रत्येक शब्द राष्ट्रहित की भावना से जुड़ा है। विपक्ष का काम केवल विरोध करना रहा गया है। उन्होंने कहा कि विपक्ष से सरकार के अरुचे कामों की सराहना की उम्मीद नहीं की जा सकती। देशहित से जुड़े मुद्दों पर भी कुछ लोग अपनी सोच के कारण विरोध करते हैं।

वेबिनार में 15 राज्यों से 150 से अधिक प्रतिभागियों ने करवाया पंजीकरण

■ विचारों से प्रभाव तक : मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च यूनिट के माध्यम से उपलब्ध संसाधनों का उपयोग विषय पर ऑनलाइन वेबिनार में किया मंथन

हरिभूमि न्यूज►►रोहतक

पंडित भगवत दयाल शर्मा पोस्ट ग्रेजुएट इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (पीजीआईएमएस) की मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च यूनिट की ओर से “विचारों से प्रभाव तक: मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च यूनिट के माध्यम से उपलब्ध संसाधनों का उपयोग” विषय पर ऑनलाइन वेबिनार का आयोजन किया गया। मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च यूनिट विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों को एक मंच पर लाकर सहयोगात्मक एवं नवाचारपूर्ण शोध को बढ़ावा देती है। यह यूनिट उपलब्ध शोध संसाधनों, प्रयोगशालाओं और विशेषज्ञता के बेहतर उपयोग में सहायता करती है तथा नए शोध विचारों, गुणवत्तापूर्ण प्रकाशनों और बड़े शोध प्रोजेक्ट्स में विज्ञान को प्रोत्साहित करती है। साथ ही, शोध को उद्योग, समाज और नीतिगत आवश्यकताओं से जोड़ने में भी इसकी महत्वपूर्ण भूमिका है।

वेबिनार में देश के 15 राज्यों से 150 से अधिक प्रतिभागियों ने पंजीकरण कराया। चिकित्सकों, शोधार्थियों, शिक्षकों एवं स्वास्थ्य क्षेत्र से जुड़े प्रतिभागियों की सक्रिय भागीदारी ने कार्यक्रम को व्यापक एवं सफल बनाया। वेबिनार की मुख्य वक्ता डॉ. आशू ग्रोवर, वैज्ञानिक, भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएमआर), नई दिल्ली ने प्रतिभागियों को



संबोधित करते हुए मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च यूनिट के उद्देश्यों एवं कार्यप्रणाली पर विस्तार से चर्चा की। पीजीआईएमएस के निदेशक डॉ. एसके सिंघल आयोजन अध्यक्ष तथा डॉ. संजय कुमार, नोडल ऑफिसर, मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च यूनिट, पीजीआईएमएस आयोजन सचिव रहे। वेबिनार के सफल आयोजन में रिसर्च साइंटिस्ट डॉ. रेनु जाखड़ और डॉ. मीनाक्षी का भी सराहनीय योगदान रहा।

मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च यूनिट के नोडल ऑफिसर डॉ. संजय कुमार ने बताया कि यूनिट के माध्यम से पीजीआईएमएस रोहतक के फैकल्टी सदस्यों एवं पीजी छात्रों को अपने शोध प्रोजेक्ट्स के लिए आर्थिक सहायता (ग्रांट) प्राप्त करने का अवसर मिलता है। इच्छुक फैकल्टी सदस्य एवं छात्र अपने शोध प्रस्ताव यूनिट के समक्ष प्रस्तुत कर सकते हैं। इन प्रस्तावों का मूल्यांकन विशेषज्ञ समिति द्वारा किया जाता है तथा गुणवत्तापूर्ण प्रस्तावों को फंडिंग प्रदान की जाती है।

लोक अदालत में 36,780 मामलों की सुनवाई, 32368 वाद निपटाए

रोहतक। न्यायालयों में लंबित मामलों का बोझ कम करने और लोगों को त्वरित न्याय दिलाने के उद्देश्य से शनिवार को रोहतक में राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन किया गया। लोक अदालत में बड़ी संख्या में लोग अपने विवादों के समाधान की उम्मीद लेकर पहुंचे। कुल 36,780 मामले सुनवाई के लिए रखे गए, जिनमें से 32,368 मामलों का निपटारा कर दिया गया। लंबित मामलों के साथ प्री-लिटिगेशन मामलों को भी आपसी सहमति और समझौते के आधार पर सुलझाया गया। राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन जिला एवं सत्र न्यायाधीश अजय तैवरिया के मार्गदर्शन में रोहतक कोर्ट परिसर में किया गया। मामलों की सुनवाई के लिए रोहतक में 7 बेंचों का गठन किया गया। इन बेंचों में अलग-अलग प्रकृति के मामलों की सुनवाई की गई। डॉ. भूपेन्द्र कुमार की अध्यक्षता में बेंच गठित की गई। इसके अलावा फैमिली कोर्ट की एमएस आर्या शर्मा और सीजेएम मोहम्मद खानर की बेंच भी बनाई गई। चार अन्य मजिस्ट्रेट बेंचों के माध्यम से भी मामलों का निपटारा किया गया। लोक अदालत में रोक बाउंस से जुड़े एनआई एक्ट के 1,752 मामल सुनवाई के लिए रखे गए। इनमें से 1,155 मामलों का समाधान किया गया। आपसी समझौते के माध्यम से मामलों के निपटारे से संबंधित पक्षों को लंबे समय तक चलने वाली अदालती प्रक्रिया से राहत मिली।



बिजली से जुड़े 1,657 मामले भी निपटे

बिजली निगम से संबंधित विवादों को भी लोक अदालत में प्राथमिकता से सुना गया। बिजली से जुड़े 1,657 मामलों का निपटारा किया गया। इस दौरान संबंधित पक्षों के बीच सहमति बनाने और विवादों को न्यायालय के बाहर समाधान की दिशा में ले जाने का प्रयास किया गया। **महमूद में भी लगी बैच** रोहतक के साथ महम में भी राष्ट्रीय लोक अदालत के लिए एक बैच गठित की गई। यहां भी विभिन्न मामलों को समझौते के आधार पर निपटाने की प्रक्रिया अपनाई गई। लोक अदालत का लाभ यह रहा कि पक्षकारों को कम समय और अपेक्षित कम खर्च में विवाद समाप्त करने का अवसर मिला। हजारों मामलों के निपटारे से अदालतों में लंबित मामलों की संख्या कम करने में भी मदद मिली।

न्यूज डायरी



पंचकोश की अवधारणा से समझाया व्यक्तित्व विकास

रोहतक। महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय (एमवीयू) के केमिस्ट्री विभाग में नवप्रवेशी एमएससी विद्यार्थियों के स्वागत के लिए इंडवशन कार्यक्रम आयोजित किया गया। विभागाध्यक्ष प्रो. देवेंद्र सिंह के मार्गदर्शन में आयोजित कार्यक्रम में विद्यार्थियों को विभाग की शैक्षणिक, शोध एवं अन्य गतिविधियों की जानकारी दी गई। कार्यक्रम में दयानंद एंड वैदिक स्टडीज सेंटर एवं सेंटर फॉर इंडियन नॉलेज सिस्टम के निदेशक प्रो. सुरेंद्र कुमार मुख्य वक्ता रहे। उन्होंने व्यक्तित्व विकास पर व्याख्यान करते हुए कहा कि वास्तविक व्यक्तित्व विकास केवल बाहरी उपलब्धियों तक सीमित नहीं, बल्कि आंतरिक चेतना और आत्म-विकास से जुड़ा है।

कन्या कॉलेज में हुई छह दिवसीय करियर कार्यशाला

रोहतक। महारानी किशोरी जाट कन्या महाविद्यालय के करियर एवं काउंसिलिंग सेल द्वारा महेंद्र प्राइड वलासूरम (नंदी ग्रुप) के सहयोग से आयोजित छह दिवसीय कार्यशाला का आज सफरतापूर्वक समापन हुआ। करियर बोथ के लिए कम्प्यूटिगेशन, कॉन्फिडेंस और प्रोफेशनलिज्म विषय पर आधारित इस कार्यशाला के मुख्य प्रशिक्षक सीनियर कॉर्पोरेट ट्रेनर विनोत कुमार रहे। आयोजन का मुख्य उद्देश्य छात्राओं के संचार कौशल, आत्मविश्वास और पेशेवर दृष्टिकोण को मजबूत कर उनके करियर विकास को नई दिशा देना था। कार्यवाहक प्राचार्य डॉ. आशा खरब और डॉ. सविता मलिक ने छात्राओं का मार्गदर्शन करते हुए ऐसे आयोजनों को आज के दौर में बेहद जरूरी बताया और छात्राओं के उत्कृष्ठ लक्षियों की कामना की। इस अवसर पर महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. आशा खरब, डॉ. सविता मलिक सहित करियर काउंसिलिंग एवं प्लेमेंटमेंट सेल से रेखा, मोना और डॉ. सुष्मा उपरिस्थ रही।

गणेश यात्रा आज, जगह-जगह होगा स्वागत

रोहतक। 78 संघ की ओर से गणेश यात्रा का आयोजन रविवार को किया जाएगा। गणेश यात्रा शहर के प्रमुख मार्गों से होते हुए दुर्गा भवन मंदिर पहुंचेगी। यात्रा को लेकर आयोजकों की ओर से तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। यात्रा के दौरान बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं के शामिल होने की उम्मीद है। गणेश यात्रा सोहम मंदिर से शुरू होगी। इसके बाद यात्रा छोट्टराम चौक, शांतमहौ चौक, झज्जार मोड़, आर्य नगर, अग्रसेन चौक और रेलेवे रोड से होते हुए भिवानी स्टैंड पहुंचेगी। यहां से यात्रा आगे बढ़ते हुए दुर्गा भवन मंदिर पहुंचेगी, जहां यात्रा का समापन होगा। आयोजकों ने श्रद्धालुओं से गणेश यात्रा में अधिक से अधिक संख्या में शामिल होने की अपील की है। यात्रा के दौरान श्रद्धालु भगवान गणेश के जयकारे लगाते हुए चलेंगे। शहर के प्रमुख बाजारों और मार्गों से यात्रा गुजरने के कारण जगह-जगह श्रद्धालुओं की ओर से स्वागत किए जाने की भी संभावना है। आयोजन को लेकर धार्मिक माहौल रहे रहने की उम्मीद है।



हिंदी काव्य-पाठ में पूर्वी अक्का, अंजली लांबा द्वितीय

रोहतक। राजकीय ज्ञानकोशर महिला महाविद्यालय, रोहतक के हिंदी विभाग में स्त्री शक्ति संगठन, प्रज्ञा साहित्यिक मंच और स्पंदन संस्था के संयुक्त तत्वावधान में हिंदी दिवस पखवाड़े पर मध्य काव्य-पाठ व कथा-वाचन प्रतियोगिता संपन्न हुई। कॉलेज प्राचार्य डॉ. शमशेर सिंह हुड्डा और संकाय अध्यक्ष ममता शर्मा के नेतृत्व में आयोजित इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. अनुप बंसल मधुकांत रहे। प्रतियोगिताओं में छात्राओं ने हिंदी गौरव, सामाजिक चेतना, राष्ट्रप्रेम और हरियाणवी संस्कृति पर आधारित कविताओं व कहानियों से बेमाला बांध दिया। इस दौरान डॉ. मधुकांत द्वारा संपादित पुस्तक महारानी लक्ष्मीबाई के प्रेरक प्रसंग का विमोचन भी किया गया। निर्णायक मंडल के फैसलों के अनुसार, हिंदी काव्य-पाठ में पूर्वी (प्रथम), अंजली लांबा (द्वितीय) और अन्व (तृतीय) विजयी रही। हरियाणवी काव्य-पाठ में अन्व ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम के अंत में हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. राजेश कुमार ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया।

सामान लाने के बहाने चोर ई-रिक्शा लेकर फरार

रोहतक। सवारी बनकर ई-रिक्शा में बैठा एक व्यक्ति चालक को ऐसा झांसा देकर गया कि वह वापस लौटा तो उसका ई-रिक्शा ही गायब मिला। आरोपी ने रास्ते में चालक को 500 रुपये दिए और सुभाष टाकजि के पास एक दुकान से सामान लाने के लिए भेज दिया। चालक जब सामान लेकर वापस आया तो वहां न तो ई-रिक्शा मिला और न ही वह सवारी दिखाई दी। काफी तलाश के बाद भी जब ई-रिक्शा का कोई सुरांग नहीं लगा तो चालक ने पुलिस को शिकार्यत दी। आर्यनगर थाना पुलिस ने अज्ञात आरोपी को खिलफा केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। श्रीनगर कॉलोनी निवासी सैनु दुआ ई-रिक्शा चालक हैं। शिकार्यत के अनुसार 11 सितंबर की रात करीब 9-30 बजे वह अपनी ई-रिक्शा लेकर मोहाना अड्डे पर था। वहां से एक सवारी को लेकर सुभाष रोड की तरफ गया। जब वह मान अस्पताल के पास पहुंचा तो सवारी ने उससे वापस मोहाना अड्डे की तरफ छड़ने के लिए कहा। चालक सवारी को लेकर वापस आने लगना। जब दोनों सुभाष टाकजि के पास पहुंचे तो सवारी ने चालक को 500 रुपये दिए और कहा कि सामने की दुकान से उसका कुछ सामान लेकर आना है। सैनु के अनुसार वह सवारी की बात पर भरोसा करके दुकान से सामान लेने चला गया।

दुकान का ताला तोड़कर 20 हजार की नकदी चुराई

रोहतक। रात को किराना दुकान बंद कर घर गया दुकानदार सुबह वापस लौटा तो दोनों ताले टूटे देखकर उसके होश उड़ गए। दुकान के अंदर सख्ती की जांच की तो गल्ले में रखी करीब 18 से 20 हजार रुपये की नकदी गायब थी। इसके अलावा रैक में रखे सिगरेट के पैकेट भी नहीं मिले। दुकानदार ने आपसपा लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खोजली तो एक युवक जीले रंग का कार में दुकान के पास आना दिखाई दिया। फुटेज में युवक दुकान के दोनों ताले तोड़कर अंदर से सामान निकालने के बाद कार में बैठकर जाता नजर आया। शिकार्यत मिलने पर पुलिस ने अज्ञात के खिलाफ केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। भिवानी चुगी स्थित राजेंद्र कॉलोनी निवासी मोहित ने पुलिस को दूध की शिकार्यत में बताया कि उसने देव हॉटल वाली गली में किराने की दुकान किराये पर ले रखी है। 10 सितंबर की रात करीब 11-30 बजे वह दुकान बंद करके घर चला गया था। अगली सुबह 11 सितंबर को जब वह दुकान पर पहुंचा तो दुकान के दोनों ताले टूटे हुए मिले। दुकान का शटर खोलकर अंदर गया तो सामान अस्त-व्यस्त नजर आया। इसके बाद उसने गल्ले में रखी नकदी और दुकान का सामान चेक किया। मोहित के अनुसार दुकान के गल्ले में करीब 18 से 20 हजार रुपये रखे हुए थे, जो चोरी हो चुके थे। इसके अलावा रैक में रखे सिगरेट के कई पैकेट भी गायब मिले।

हरिभूमि

आवश्यक सूचना

जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-

हरिभूमि, नजदीक इण्डस पब्लिक स्कूल, दिल्ली रोड, रोहतक

ऑफिस नं. : 9253681019-20,

फोन : 8295154800, 9253681010, 9253681005

मृत्यु अंत नहीं है

मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती

मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है

आत्मा पथ प्रदर्शक है।

हरिभूमि

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।

तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश

आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुगन्ध हरिभूमि के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5 X 8 से.मी	स्थायी संस्करण के अन्तर के पूछ पर	रु. 2500/-
10X 8 से.मी		रु. 3000/-

+5% GST Extra

नोट : विशेष छुट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कोई रेट लागू।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें

हिंदी कार्यालय : हरिभूमि, कृषि विज्ञान केंद्र के सामने, दिल्ली रोड, रोहतक फोन : 9939593400

मुख्य कार्यालय : हरिभूमि, नजदीक इण्डस पब्लिक स्कूल, दिल्ली रोड, रोहतक फोन : 9253681019-20



आवरण कथा
यामिनी गजानन रामपल्लीवार

भाषा और संस्कृति का रिश्ता कोई ऊपरी बंधन मात्र नहीं होता, वह जड़ और वृक्ष का रिश्ता होता है। हिंदी के संदर्भ में यह बात और भी गहरे अर्थ रखती है, क्योंकि हिंदी केवल संवाद का माध्यम नहीं, हिंदुस्तान की सांस्कृतिक पहचान का जीवंत प्रमाण है। इसकी जड़ें संस्कृत जैसी वैज्ञानिक और अनुशासित भाषा में हैं, जिसने भोजपुरी, अवधी और ब्रज जैसी सैकड़ों बोलियों को अपनी सुंदर शाखाओं की तरह जन्म दिया। यह विस्तार किसी एक भाषा की सीमा नहीं, बल्कि एक पूरे उपमहाद्वीप की सांस्कृतिक चेतना का फैलाव है।

भाषा से जुड़ी देश की पहचान

14 सितंबर को जब हम हिंदी दिवस मनाते हैं, तो यह अवसर केवल एक तिथि का उत्सव नहीं होना चाहिए। यह अवसर रुककर यह सोचने का भी हो कि हमने इस भाषा को कितना जिया है और कितना केवल औपचारिकता में समेट दिया है? इतिहास गवाह है कि जब कवि इकबाल ने लिखा था, 'हिंदी हैं हम, वतन है हिंदोस्त' हमारा।' तब उन्होंने भाषा और राष्ट्र की पहचान को एक ही सांस में बांध दिया था। उनकी यह पवित्र आज भी उतनी ही सार्थक है, क्योंकि जिस भाषा की पहचान हिंद महासागर के तट से लेकर हिमालय की चोटियों तक फैली हो, वह भाषा किसी परिचय की मोहताज नहीं।

शब्दों में सदियों की साधना

हिंदी का यह वैभव किसी एक कवि या रचनाकार की देन नहीं, बल्कि सदियों की साधना का परिणाम है। तुलसी ने इसे भक्ति की मिठास दी, सूर ने इसमें वात्सल्य का रस घोला, कबीर ने इसे सीधी और निर्भीक वाणी दी और निराला ने इसमें विद्रोह और नवीनता का स्वर भरा। इन सबने मिलकर हिंदी को वह समृद्धि दी, जो आज भी हर हिंदुस्तानी की रग-रग में बहती है। यही कारण है कि हिंदी को केवल एक भाषा कहना उसके साथ अन्याय होगा, वह तो भावनाओं की वह साझी विरासत है, जिसमें देश की विविधता खुद को सहज पाती है।



जन-मन में बसती है हिंदी

किताबों के पन्नों पर पढ़े जाने से पहले, भाषणों में, कहीं सुने जाने से पहले, गूंजी थी वो मेरे कानों में। जैसे गूंजी थी अभिमान्यु के कानों में चक्रव्यूह भेदने की कला। फिर अकसर गूंजती री सैरी दो, मां की आवाज में। लोरी में, और पिता की डांट में छिपे दुलार में भी। और उनके कई अनकहे भय के बीच, लैसला देने वाले संसार में भी। उसने तब भी गले लगाया था मुझे जब मैं नहीं जानती थी उसके व्याकरण का कोई नियम। क्योंकि यह उसके और मेरे बीच के

उन रिश्तों की गर्माहट है, जिन्हें परिभाषित नहीं कर सकता कोई शब्दकोश। वो मेरे आंगन में बिखरी सुबह की धूप है। सर पर बनी रहने वाली, ममता की छांव है। दादी की कलनी में हर बार आता हुआ कोई पुराना गांव है। वो और कोई नहीं मेरी हिंदी है। जिसमें बसी है कबीर की निर्भीकता, तुलसी की लोक-गंध की खुशबू प्रेमचंद के पागों का संघर्ष, महादेवी की करुणा, और निराला की विद्रोही चेतना। क्योंकि मेरी हिंदी ने बनाया है राजमहलों से अधिक जन-मन में अपना घर।

विशेष: हिंदी दिवस, 14 सितंबर

हर साल 14 सितंबर के आस-पास सरकारी दफ्तरों में हिंदी पखवाड़ा शुरू होता है, मंचों से हिंदी की महिमा गाई जाती है और अपनी भाषा पर गर्व करने की बातें होती हैं। लेकिन इन औपचारिकताओं से आगे बढ़कर हमें यह सवाल भी पूछना चाहिए कि क्या हम अपनी रोजमर्रा के जीवन में हिंदी को सचमुच सम्मान देते हैं? उससे प्यार करते हैं?

हमारे हिंदुस्तान की आत्मा है हिंदी

समावेशी भाषा है हिंदी

यह भी ध्यान रखना जरूरी है कि हिंदी की श्रेष्ठता का यह अर्थ कभी नहीं कि अन्य भाषाओं या बोलियों को कमतर आंका जाए। हिंदी का असली गौरव इसी में रहा है कि उसने सदा दूसरी भाषाओं और बोलियों को अपनाया, उनसे शब्द लिए और उन्हें भी फलने-फूलने का अवसर दिया। भोजपुरी, अवधी, ब्रज, मैथिली और राजस्थानी जैसी बोलियां हिंदी की प्रतिद्वंद्वी नहीं, उसकी शक्ति हैं। इसी समावेशी स्वभाव के कारण हिंदी हर हिंदुस्तानी के मन में अपना स्थान बना पाई है।

कहां हैं झिझक की जड़ें

यह विदंबना ही है कि आज कुछ लोगों को हिंदी बोलते हुए झिझक या कमतरी का एहसास होता है। यह झिझक कहां से आती है, इस पर गंभीरता से विचार करने की जरूरत है। बड़े शहरों के कॉर्पोरेट कार्यालयों में, महानगरों की पार्टियों में और यहां तक कि कुछ शिक्षित परिवारों में भी हिंदी बोलने को पिछड़ेपन से जोड़कर देखा जाने लगा है। अंग्रेजी में दक्षता आवश्यक है, इसमें कोई संदेह नहीं, क्योंकि वह आज वैश्विक संपर्क की भाषा बन चुकी है। परंतु किसी दूसरी भाषा को

सीखने और अपनी भाषा को त्यागने में बुनियादी अंतर है। जब यह अंतर धुंधला पड़ने लगता है, तभी भाषा का यह संकट जन्म लेता है। बरसों पहले मेरे एक पारिवारिक समारोह में एक किशोर अपनी दादी से अंग्रेजी में बात करने की कोशिश करने लगा, टूटे-फूटे शब्दों में, केवल इसलिए कि साथ बैठे उसके अंग्रेजी-माध्यम के मित्र उसे 'देसी' न समझें। दादी ठहरकर मुसकुराई और बोलीं, 'बेटा, जिस भाषा में मैंने तुझे कहानियां सुनाईं, उसी में बात कर, शर्म किस बात की?' उस किशोर की दादी के एक वाक्य ने पूरा वातावरण बदल दिया। गहराई से सोचें तो स्पष्ट होता है, वह झिझक केवल उस बच्चे की नहीं थी, वह उस पूरी पीढ़ी की झिझक थी, जिसे यह सिखाया गया कि तरक्की अंग्रेजी की जुबान से होकर गुजरती है और अपनी भाषा पीछे छूट जाने वाली चीज है। यह संकट केवल



की जा सकती, उसी तरह अपनी भाषा से कटकर अपनी सांस्कृतिक पहचान को जीवंत रखने की कल्पना भी अधूरी रह जाती है। यह प्रवृत्ति बदलनी चाहिए और इसके लिए किसी बड़े आंदोलन की नहीं, बल्कि छोटे-छोटे व्यावहारिक प्रयासों की आवश्यकता है। घर के भीतर बच्चों से हिंदी में बात करना, कार्यस्थल पर जहां संभव हो वहां हिंदी को सहजता से अपनाना, हिंदी साहित्य को केवल पाठ्यक्रम की मजबूरी न मानकर आनंद के लिए साहित्यिक किताबें पढ़ना, ऐसे ही अनेक छोटे-छोटे प्रयास मिलकर बड़ा परिवर्तन ला सकते हैं।

संकल्प लेने का दिन हिंदी दिवस

आज जब हिंदी दिवस के अवसर पर सरकारी कार्यालयों में औपचारिक समारोह होंगे, भाषणों में हिंदी की महिमा गाई जाएगी, तब यह प्रश्न स्वयं से पूछना जरूरी है कि क्या हमने इस भाषा को अपने दैनिक जीवन में उताना सम्मान दिया, जितना वह हकदार है। हिंदी को बचाने की जिम्मेदारी किसी एक दिन या किसी एक विभाग की नहीं, बल्कि हर उस व्यक्ति की है, जो इसे अपनी भाषा मानता है। हिंदी दिवस केवल स्मरण का दिन नहीं, संकल्प का दिन बने, यही आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है। जब तक हम अपनी भाषा बोलने में गर्व का अनुभव नहीं करेंगे, तब तक उसकी समृद्ध विरासत आगे नहीं बढ़ पाएगी। इसलिए आइए, इस हिंदी दिवस पर केवल उत्सव नहीं, आत्मनिरीक्षण भी करें और अपनी भाषा को उसका वास्तविक सम्मान लोटाएं। *

लंग्य / गोविंद भारद्वाज

सरकार जब नई आती है तो रुतबा जमाने के लिए और आमजन में भरोसा कायम करने के लिए यह आदर्श वाक्य दोहराती है कि हमारी सरकार में कोई गड़बड़ी बर्दाश्त नहीं होगी। लेकिन धीरे-धीरे जाए-जाए तरीके से गड़बड़ी आरंभ हो जाती है।

गड़बड़ी बर्दाश्त नहीं



लुटेरों, बदमाशों, उठाईगीरों या जमाखोरों, भ्रष्टाचारियों, रिश्ततखोरों, बलात्कारियों या मिलावटखोरों के लिए चेतावनी दी गई या आम नागरिकों के लिए। खैर यह जुमला असरदार हो न हो पर लोगों को दिलासा दिलाए रखने के लिए कहना जरूरी है। हालांकि गड़बड़ी करता कौन है, ये विषय शोध का है। *

परीक्षा

हो जाया करती थी। ऐसे में उन्हें दो दिनों तक पूरा आराम करना पड़ता था। ट्रेन ने रात के एक बजे अंबाला पहुंचना था। मुझे डर लग रहा था कि सर्दी की ठिठुरती रात में इस समय मैं पापा को संभाले हुए सुरक्षित घर तक कैसे पहुंचूंगी? घर से स्टेशन पर किसी को बुलाया भी नहीं जा सकता था। न मम्मी को और न छोटी बहन को। अंबाला के प्लेटफॉर्म पर ट्रेन रुकी तो मैंने सहारा देकर पापा को डिब्बे से नीचे उतारा। फिर सहारा देकर उन्हें स्टेशन से बाहर ले आई। पापा निकले से थे।

स्टेशन के बाहर पांच-सात ऑटो-रिक्षा खड़े थे, जिनके ड्राइवर कपड़े से मुह, सिर ढंके स्टेशन से बाहर आती सवारियों से उनके गंतव्य के बारे में पूछ रहे थे। ऐसे किसी ड्राइवर से बात करने में भी मुझे डर लग रहा था। तभी न जाने कैसे मुझमें इतनी हिम्मत आ गई कि एक ड्राइवर को मैंने बड़ी आत्मविश्वास भरी रीबदार आवाज में शंकर नगर चलने के लिए कहा और पापा के साथ ऑटो-रिक्षा में बैठ गई। मुझे लगा पुलिस इम्पेक्टर की परीक्षा से पहले ही असली परीक्षा मैंने पास कर ली है। *

-हरिश कुमार 'अमित'

विशेष: गणेश चतुर्थी

परंपरा-आस्था का संगम महापर्व गणेशोत्सव



सांस्कृतिक पर्व / शिखर चंद जैन

गणेश चतुर्थी का त्योहार भारतीय जनमानस के हृदय में अत्यंत पवित्र स्थान रखता है। यद्यपि भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी (14 सितंबर) को विघ्नहर्ता भगवान श्री गणेश की स्थापना और अनंत चतुर्दशी को उनके विसर्जन का दृश्य हर वर्ष भारत के कोने-कोने में दिखाई देता है, परंतु इस महापर्व के कई ऐसे पहलू हैं, जो बहुधा लोकस्मृति या सामान्य वार्ताओं से परे छूट जाते हैं। यह उत्सव केवल धार्मिक कर्मकांड, ढोल-नगाड़ों और सुंदर झांकियों तक सीमित नहीं है, बल्कि इसके मूल में राजनीति, समाज, प्राचीन भूगोल, खगोल विज्ञान और पर्यावरण संरक्षण की गहरी जड़ें जुड़ी हुई हैं। गणेश चतुर्थी भारत की उस अमर सांस्कृतिक चेतना का प्रतीक है, जो अध्यात्म को समाज सेवा से, इतिहास को भविष्य की सोच से और धर्म को पर्यावरण संरक्षण से जोड़ती है।

तिलक की दूरदर्शी सामाजिक पहल: गणेश चतुर्थी का इतिहास अत्यंत प्राचीन है और 18वीं शताब्दी में पेशवाओं के काल में इसे पुणे में राज्योत्सव के रूप में मनाया जाता था। आधुनिक भारत में इसका स्वरूप पूरी तरह से बदलने का श्रेय लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक को जाता है। वर्ष 1893 में तिलक ने इसे निजी गृह-पूजा के बंद कमरों से निकालकर 'सार्वजनिक गणेशोत्सव' का रूप दिया। ब्रिटिश हुकूमत के दौर में 'वर्नाकुलर प्रेस एक्ट' और अन्य कठोर कानूनों के कारण भारतीयों के लिए राजनीतिक सभाएं करना या सामाजिक मुद्दों पर एकत्र होना पूरी तरह प्रतिबंधित था। तिलक ने भांप लिया कि अंग्रेज शासक धार्मिक सम्मेलनों में सीधे हस्तक्षेप करने से डरते हैं। अतः उन्होंने गणेशोत्सव को एक सांस्कृतिक और सामाजिक मंच बनाया। पंडालों में स्वतंत्रता संग्राम के विचारों, स्वदेशी आंदोलनों और समाज सुधारों पर चर्चा होने लगी। इस प्रकार, एक धार्मिक उत्सव औपनिवेशिक सत्ता के खिलाफ जनक्रांति का प्रतीक बन गया।

जल निकायों का वैज्ञानिक कायाकल्प:

गणेश चतुर्थी से आरंभ होने वाला गणेशोत्सव केवल धार्मिक पर्व नहीं है। इसकी जड़ें भारत की परंपरा, इतिहास और संस्कृति से भी जुड़ी हैं। इस पर्व का आरंभ सामाजिक समारोहों के रूप में कब और कैसे हुआ, आप जरूर जानना चाहेंगे।

आधुनिक समय में विसर्जन के कारण होने वाले जल प्रदूषण पर चिंता व्यक्त की जाती है, लेकिन पुराने दौर में गणेश प्रतिमा का निर्माण और उसका जल-विसर्जन एक अत्यंत वैज्ञानिक और पर्यावरणीय प्रक्रिया थी। पारंपरिक रूप से, गणेश प्रतिमाएं केवल शुद्ध चिकनी मिट्टी (शाड़ू माटी) से बनाई जाती थीं। इसमें हल्दी, चंदन, भस्म और कुमकुम का लेप किया जाता था। मानसून के अंत में जब नदियां और तालाब नए पानी से भर जाते थे, तब इन मिट्टी की मूर्तियों को जल में विसर्जित किया जाता था। मिट्टी, जल निकायों के समृद्ध करती थी, जबकि हल्दी और चंदन प्राकृतिक एंटीसेप्टिक तथा जीवाणुरोधक के रूप में पानी को शुद्ध करते थे। यह प्राचीन परंपरा वास्तव में वर्षा ऋतु के बाद जल स्रोतों के वैज्ञानिक कायाकल्प का माध्यम थी।

मोदक का औषधीय महत्व: गणेश जी को 'मोदक प्रिय' कहा जाता है, लेकिन मोदक केवल एक स्वादिष्ट मिठाई नहीं है। इसका निर्माण आयुर्वेद के सिद्धांतों पर आधारित है। पारंपरिक रूप से भाद्रपद (सितंबर) के महीने में उकड़ीचे मोदक (भाप में पके हुए मोदक) बनाए जाते हैं। मानसून के खत्म होने और शरद ऋतु के आगमन के समय शरीर में 'पित्त' दोष बढ़ने की संभावना होती है। मोदक के बाहरी आवरण में चावल का आटा और अंदर गुड़, ताजा कसा हुआ नारियल, जायफल और इलायची का मिश्रण होता है, जिसे शुद्ध देशी घी के साथ परोसा जाता है। नारियल और गुड़ पेट की अग्नि को शांत करते हैं और पाचन तंत्र को दुरुस्त रखते हैं। इस तरह मोदक का भोग ऋतु परिवर्तन के दौरान स्वास्थ्य की रक्षा करने वाला एक आयुर्वेदिक आहार है।

समृद्ध करे सांस्कृतिक परिदृश्य: भारत के कला और सांस्कृतिक परिदृश्य को समृद्ध करने में गणेशोत्सव ने एक 'अदृश्य अकादमी' के रूप में भूमिका निभाई है। 10 दिनों तक चलने वाले इस उत्सव में सार्वजनिक पंडालों द्वारा संगीत संध्याएं, नाटक (नाट्य संगीत), लोककलाएं (जैसे लावणी, गोंधल) और नृत्य प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं। इस तरह इसका सांस्कृतिक महत्व भी है। *

पुस्तक चर्चा / विज्ञान गूण

संगीतमय जीवन



विख्यात खयाल गायिका गंगूबाई हंगल की आत्मकथा कई वर्ष पहले कन्नड़ भाषा में प्रकाशित हुई थी। हाल में ही उसका हिंदी अनुवाद 'जीवन संगीत' शीर्षक से प्रकाशित होकर आया है। यह आत्मकथा सामाजिक उपेक्षाओं, पारिवारिक समस्याओं और आर्थिक संकटों के बीच रहकर संगीत को समर्पित एक कलाकार की साधना यात्रा है। गंगूबाई हंगल ने कई स्थलों पर स्वीकार किया है कि उनकी मां के त्याग और उनके गुरुओं के सही मार्गदर्शन ने ही उन्हें इतनी प्रतिष्ठा दिलाई। यही नहीं वे पूरी विनम्रता से हर उस शख्स के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती दिखाई देती हैं, जिन्होंने किसी भी रूप में उनकी संगीत साधना में जरा भी सहयोग प्रदान किया था। हालांकि कुछ स्थलों पर उनके मन में समाई टीस प्रकट हुई है। जातिगत भेदभाव पर अपने अतीत की याद करते हुए वह कहती हैं, 'अगर हम लोग किसी ऊंची जाति के घर खाना खाने जाते थे तो हमें खुद अपने बर्तन मांजने पड़ते थे।' किशोरावस्था में ही विवाह कर

दिए जाने और उसके कुछ समय बाद ही मां-पिता के निधन होने के बावजूद गंगूबाई ने कभी अपनी संगीत साधना में व्यवधान नहीं आने दिया। इसी का परिणाम रहा कि वे हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में उपलब्धियों के सोपानों पर अग्रसर रही और अद्वितीय प्रतिष्ठा प्राप्त की। इस आत्मकथा में कहीं भी आत्मश्लाघा का भाव नजर नहीं आता है। वे अपने सभी प्रशंसक संगीत प्रेमियों, विभिन्न सम्मानों से नवाजने के लिए सरकार के प्रति कृतज्ञता भी ज्ञापित करती हैं। *

पुस्तक: जीवन संगीत- गंगूबाई हंगल (आत्मकथा), अनुवाद: मृत्युंजय, मूल्य: 199 रुपए, प्रकाशक: राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

लघुकथाएं

खाका

अविनाश पुलिस महकमे का वरिष्ठ स्केच आर्टिस्ट था। उसके हाथों से बने खाके कभी गलत नहीं होते थे। एक शाम, एक सहमी हुई बुजुर्ग महिला उसके घर में हुई डकेती के गवाह के तौर पर एक शख्स का हुलिया बताने पहुंची। अविनाश ने कागज पर पेंसिल टिकाई। जैसे-जैसे महिला उस शख्स के माथे के कटे निशान, तीखी नाक और गहरी आंखों का ब्योरा देने लगी, अविनाश की अंगुलियां कांपने लगीं। कैनवास पर उसके अपने इकलौते बेटे का चेहरा उभर रहा था। अविनाश के भीतर भयंकर द्वंद छिड़ गया, एक कलाकार की निष्ठा और बाप के मोह के बीच। क्या वह लकीरों को बदलकर अपने बेटे को बचा ले? उसने भारी मन से, बिना कोई हेर-फेर किए बिल्कुल हूबहू वैसा चेहरा उकेरा, जैसा महिला ने बताया था और ड्राइंग शीट पुलिस अप्रसर की ओर बढ़ा दिया। तभी महिला स्केच देखकर रोते हुए बोली, 'हां साहब! यही वो जीवांज लड़का है, जिसने डकेती से भिड़कर मेरी जान बचाई। अस्पताल में बेहोश पड़ा है, इसके घर खबर करवा दो।' अविनाश की कांपती अंगुलियों से पेंसिल छूटकर गिर गई। *

-देवेंद्रराज सुथार

मराठी संस्कृति का प्रभाव